Pradeep

Vishakha

Model: Web-MilanPhal

Order No: 112920

कुँडली मिलान का महत्व

वैवाहिक जीवन में अनुकूलता हेतु जन्मकुण्डली मिलान किया जाता है।

इसमें सर्वप्रथम अष्टकूट मिलान किया जाता है। जातक की राशि व नक्षत्र के अनुसार उसका वर्ण, वश्य, तारा, योनि, राशेश, गण, भकूट एवं नाडी का ज्ञान करके वर-वधू के जीवन की अनुकूलता अथवा प्रतिकूलता का निर्णय किया जाता है। वर्ण विचार से कर्म, वश्य विचार से स्वभाव, तारा विचार से भाग्य, योनि विचार व ग्रह मैत्री विचार से पारस्परिक संबध, गण से सामाजिकता, भकूट से जीवन में तालमेल एवं नाड़ी विचार से स्वास्थ्य व सतांन संबधी फल का विचार किया जाता है। इन सभी गुणों को क्रमशः 1 से 8 तक अंक दिये जाते है। इस प्रकार अष्टकूट विचार में कुल 36 गुणों का विचार किया जाता है। जिसमें कम से कम 18 गुणों का होना आवश्यक है। इससे कम गुण वाले विवाह ज्योतिषीय विधान के अनुसार अव्यवहारिक रहते हैं।

अष्टकूट मिलान के साथ मांगलिक दोष का विचार भी अति महत्वपूर्ण माना जाता है। यदि मंगल लग्न कुंडली में 1,4,7,8 एवं 12 वें भाव में स्थित हो तो मंगली दोष होता है। मंगली दोष निवारण के लिए आवश्यक है कि वर-वधू दोनों मंगली न हों या दोनों मंगली हों। शास्त्रों में इनके अलावा भी दोष निवारण के सूत्र दिए गए हैं। इस दोष के निवारण से किसी प्रकार के अमंगल की संभावनाएं कम हो जाती है और वैवाहिक जीवन सुख व शांतिपूर्ण गुजरता है।

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
09/07/1988	जन्म तिथि	10/12/1992
शनिवार	दिन	गुरुवार
घंटे 21:00:00	जन्म समय	08:25:00 घंटे
घटी 38:23:56	जन्म समय(घटी)	04:21:31 घटी
India	देश	India
Nagpur	स्थान	Raipur
21:08:44 उत्तर	अक्षांश	21:15:04 उत्तर
79:05:44 पूर्व	रेखांश	81:37:04 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:13:37	स्थानिक संस्कार	-00:03:32 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:38:25	सूर्योदय	06:30:30
18:59:02	सूर्यास्त	17:22:24
23:41:52	चित्रपक्षीय अयनांश	23:45:47

मकर	लग्न	धनु
शनि	लग्न लग्नाधिपति	गुरु
वृष	राशि	वृष
शुक्र	राशि-स्वामी	शुक्र
कृतिका	नक्षत्र	मृगशिरा
सूर्य	नक्षत्र स्वामी	मंगल
3	चरण	1
शूल	योग	साध्य
बालव	करण	बालव
उ-उदय	जन्म नामाक्षर	वे-वैशाली
कर्क	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	धनु
वैश्य	वर्ण	वैश्य
चतुष्पाद	वश्य	चतुष्पाद
मेष	योनि	सर्प
राक्षस	गण	देव
अन्त्य	नाड़ी	मध्य
गरूड़	वर्ग	मृग

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
सूर्य 2वर्ष 10मा 2दि		27:35:57	मक	लग्न	धनु	20:08:00	मंगल 5वर्ष 5मा 14दि	
राहु		23:55:21	मिथु	सूर्य	वृश्चि	24:32:42	गुरु	
12/05/2008		03:41:21	वृष	चंद्र	वृष	26:16:22	25/05/2016	
12/05/2026		04:18:55	मीन	मंगलव	कर्क	02:59:49	25/05/2032	
राहु	23/01/2011	03:01:36	मिथु	बुध	वृश्चि	03:46:55	गुरु	14/07/2018
गुरु	18/06/2013	04:03:30	वृष	गुरु	कन्या	17:16:35	शनि	24/01/2021
शनि	24/04/2016	20:42:32	वृष	शुक्र	मक	07:51:11	बुध	02/05/2023
बुध	11/11/2018	04:10:41	धनु व	शनि	मक	20:30:12	केतु	07/04/2024
केतु	30/11/2019	22:16:32	कुंभ व	राहु व	वृश्चि	27:44:07	शुक्र	07/12/2026
शुक्र	29/11/2022	22:16:32	सिंह व	केतु व	वृष	27:44:07	सूर्य	25/09/2027
सूर्य	24/10/2023	04:35:01	धनु व	हर्ष	धनु	22:39:21	चन्द्र	24/01/2029
चन्द्र	24/04/2025	14:52:00	धनु व	नेप	धनु	23:48:05	मंगल	31/12/2029
मंगल	12/05/2026	16:05:32	तुला व	प्लूटो	वृश्चि	00:05:33	राहु	25/05/2032

23:41:52 चित्रपक्षीय अयनांश 23:45:47

लग्न-चलित

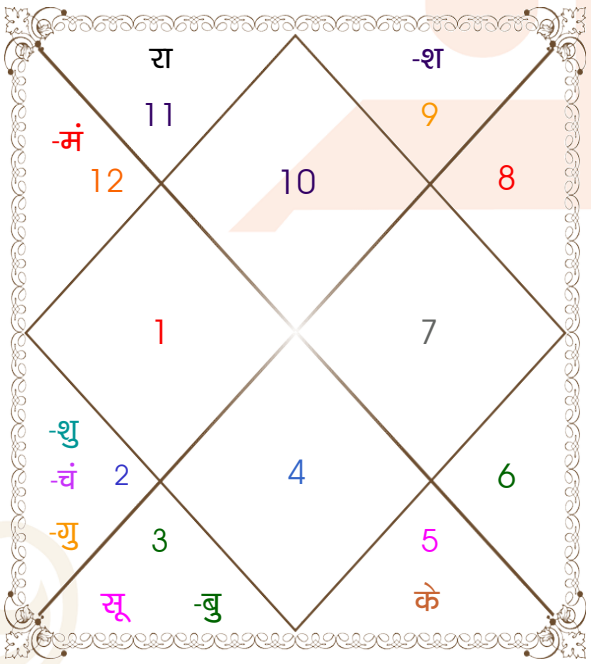

लग्न-चलित

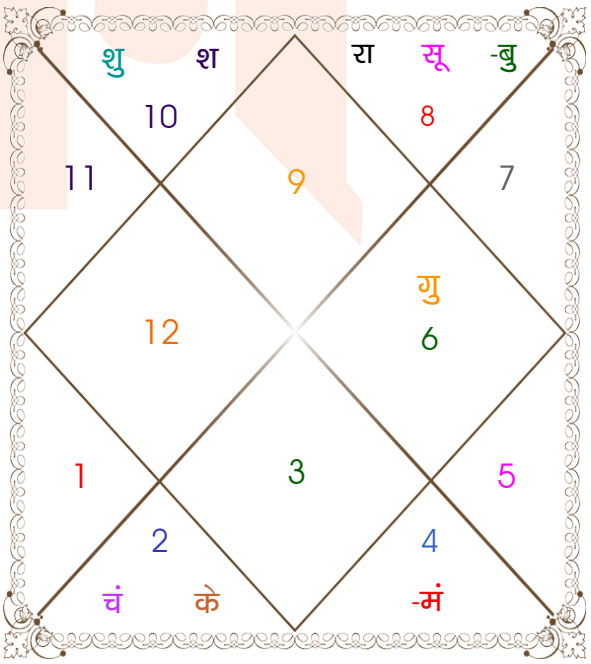

चन्द्र कुंडली

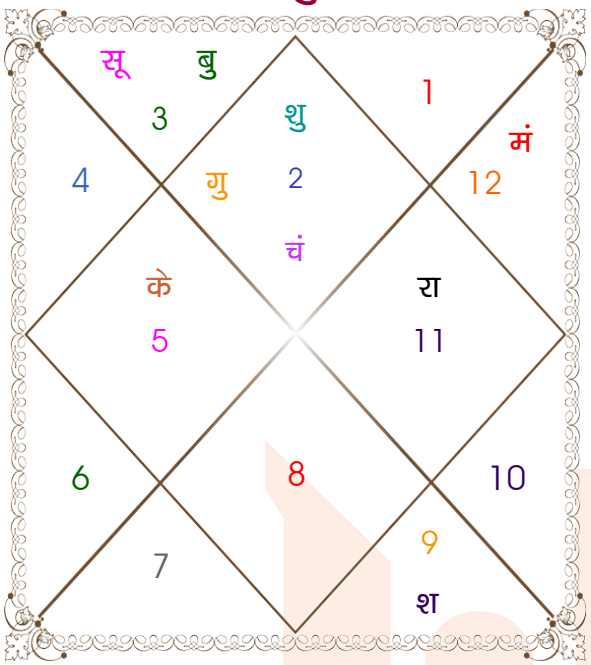

चन्द्र कुंडली

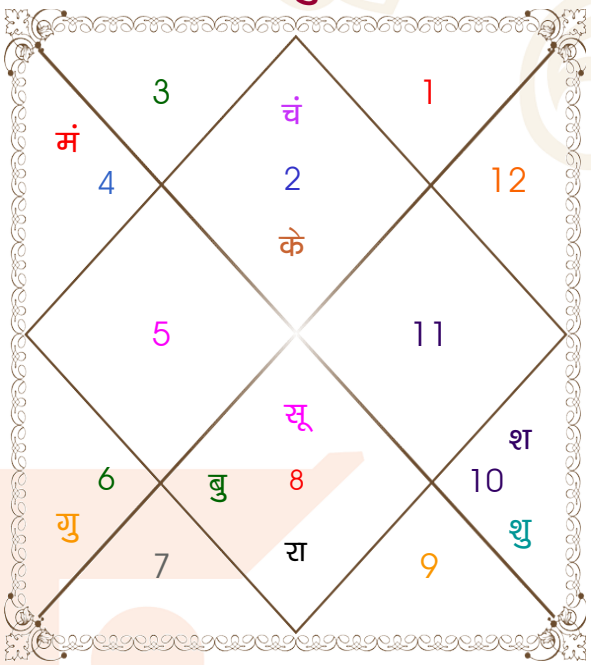

नवमांश कुंडली

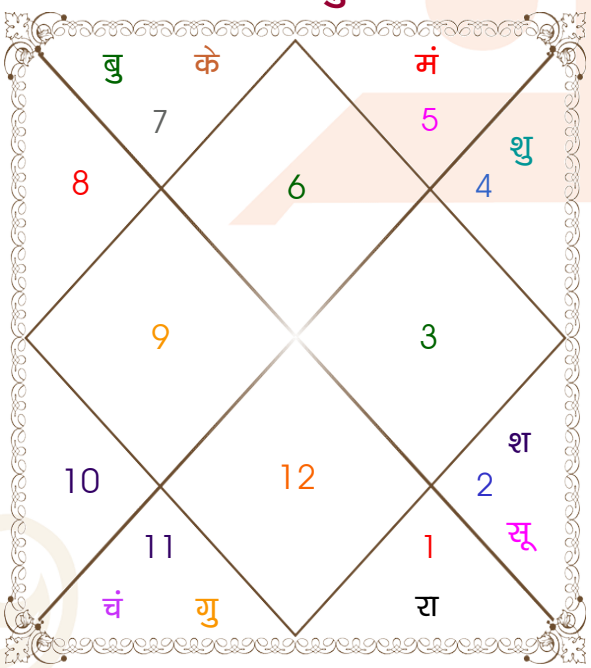

नवमांश कुंडली

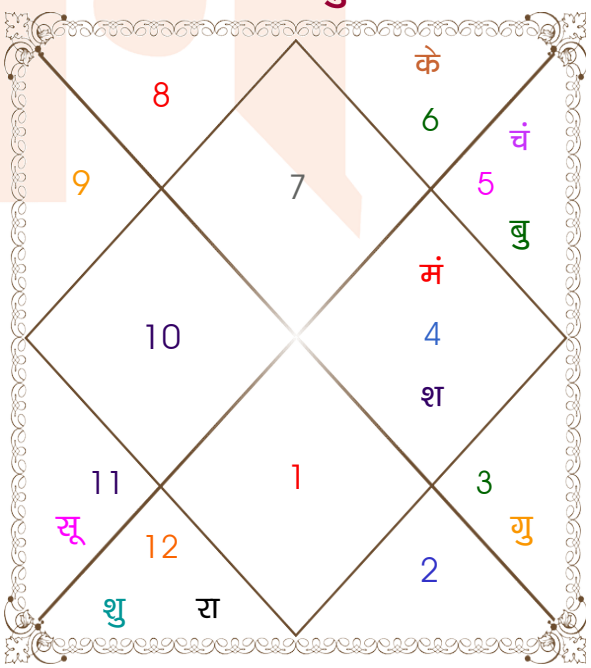

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : सूर्य 2 वर्ष 10 मास 2 दिन

के.पी. अयनांश : 23:35:36

फॉरच्युना : धनु 07:21:57

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मिथु	23:55:21	बुध	गुरु	बुध	बुध
चंद्र		वृष	03:41:21	शुक्र	सूर्य	शनि	केतु
मंगल		मीन	04:18:55	गुरु	शनि	शनि	शुक्र
बुध		मिथु	03:01:36	बुध	मंगल	शुक्र	शुक्र
गुरु		वृष	04:03:30	शुक्र	सूर्य	शनि	शुक्र
शुक्र		वृष	20:42:32	शुक्र	चंद्र	शुक्र	शुक्र
शनि	व	धनु	04:10:41	गुरु	केतु	चंद्र	शनि
राहु	व	कुंभ	22:16:32	शनि	गुरु	शनि	बुध
केतु	व	सिंह	22:16:32	सूर्य	शुक्र	शनि	बुध
हर्ष	व	धनु	04:35:01	गुरु	केतु	चंद्र	शुक्र
नेप	व	धनु	14:52:00	गुरु	शुक्र	शुक्र	शनि
प्लूटो	व	तुला	16:05:32	शुक्र	राहु	शुक्र	राहु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	मक	27:35:57	शनि	मंगल	गुरु	मंगल
2	मीन	05:32:20	गुरु	शनि	बुध	बुध
3	मेष	09:34:08	मंगल	केतु	शनि	शनि
4	वृष	07:49:16	शुक्र	सूर्य	शुक्र	शुक्र
5	मिथु	02:48:41	बुध	मंगल	शुक्र	शुक्र
6	मिथु	28:03:04	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
7	कर्क	27:35:57	चंद्र	बुध	गुरु	मंगल
8	कन्या	05:32:20	बुध	सूर्य	बुध	शुक्र
9	तुला	09:34:08	शुक्र	राहु	गुरु	शुक्र
10	वृश्चि	07:49:16	मंगल	शनि	केतु	गुरु
11	धनु	02:48:41	गुरु	केतु	शुक्र	बुध
12	धनु	28:03:04	गुरु	सूर्य	चंद्र	बुध

भाव कुंडली

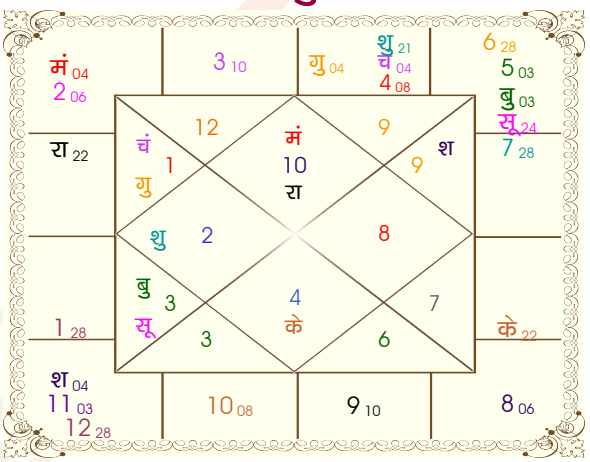

भोग्य दशा काल : मंगल 5 वर्ष 5 मास 14 दिन

के.पी. अयनांश : 23:39:17

फॉरच्युना : मिथुन 21:51:39

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		वृश्चि	24:32:42	मंगल	बुध	राहु	गुरु
चंद्र		वृष	26:16:22	शुक्र	मंगल	गुरु	गुरु
मंगल	व	कर्क	02:59:49	चंद्र	गुरु	राहु	सूर्य
बुध		वृश्चि	03:46:55	मंगल	शनि	शनि	बुध
गुरु		कन्या	17:16:35	बुध	चंद्र	शनि	राहु
शुक्र		मक	07:51:11	शनि	सूर्य	शुक्र	शुक्र
शनि		मक	20:30:12	शनि	चंद्र	शुक्र	शुक्र
राहु	व	वृश्चि	27:44:07	मंगल	बुध	गुरु	राहु
केतु	व	वृष	27:44:07	शुक्र	मंगल	गुरु	राहु
हर्ष		धनु	22:39:21	गुरु	शुक्र	शनि	शुक्र
नेप		धनु	23:48:05	गुरु	शुक्र	शनि	गुरु
प्लूटो		वृश्चि	00:05:33	मंगल	गुरु	चंद्र	शनि

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	धनु	20:08:00	गुरु	शुक्र	गुरु	गुरु
2	मक	24:07:23	शनि	मंगल	राहु	राहु
3	कुंभ	29:49:33	शनि	गुरु	चंद्र	गुरु
4	मेष	02:36:09	मंगल	केतु	शुक्र	बुध
5	वृष	00:31:43	शुक्र	सूर्य	राहु	शुक्र
6	वृष	25:19:46	शुक्र	मंगल	राहु	केतु
7	मिथु	20:08:00	बुध	गुरु	गुरु	गुरु
8	कर्क	24:07:23	चंद्र	बुध	राहु	राहु
9	सिंह	29:49:33	सूर्य	सूर्य	राहु	शनि
10	तुला	02:36:09	शुक्र	मंगल	केतु	बुध
11	वृश्चि	00:31:43	मंगल	गुरु	चंद्र	सूर्य
12	वृश्चि	25:19:46	मंगल	बुध	राहु	केतु

भाव कुंडली

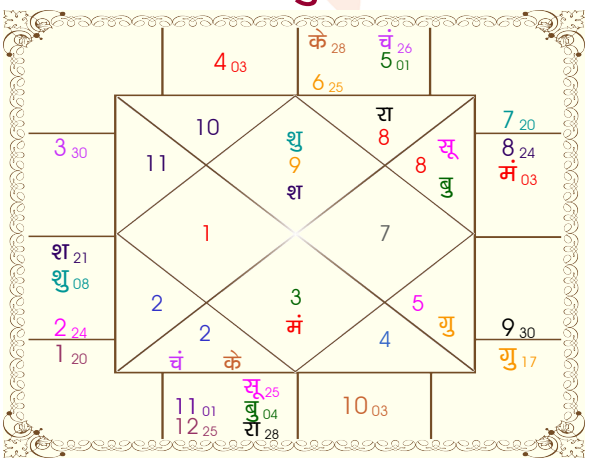

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	मंगल+ बुध, शनि- राहु,
2	सूर्य- गुरु- राहु-
3	सूर्य, चंद्र, मंगल- बुध- गुरु, शुक्र, राहु,
4	शुक्र, केतु+
5	सूर्य, चंद्र, बुध, गुरु,
6	बुध-
7	चंद्र- शुक्र- शनि, केतु,
8	बुध-
9	शुक्र- केतु-
10	मंगल- बुध-
11	सूर्य- मंगल, गुरु- शनि, राहु-
12	सूर्य- गुरु- राहु-

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	मंगल- बुध, गुरु- शुक्र, शनि,
2	बुध- शनि-
3	बुध- शनि-
4	चंद्र- मंगल- केतु-
5	शुक्र-
6	चंद्र, गुरु, शुक्र- शनि, केतु,
7	सूर्य- चंद्र, मंगल, बुध- राहु- केतु,
8	चंद्र- गुरु- शनि-
9	सूर्य- मंगल, गुरु, शुक्र-
10	शुक्र-
11	सूर्य+ चंद्र- मंगल- बुध, शुक्र, राहु, केतु-
12	चंद्र- मंगल- राहु, केतु-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	2- 3, 5, 11- 12-
चंद्र	3, 5, 7-
मंगल	1+ 3- 10- 11,
बुध	1, 3- 5, 6- 8- 10-
गुरु	2- 3, 5, 11- 12-
शुक्र	3, 4, 7- 9-
शनि	1- 7, 11,
राहु	1, 2- 3, 11- 12-
केतु	4+ 7, 9-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	7- 9- 11+
चंद्र	4- 6, 7, 8- 11- 12-
मंगल	1- 4- 7, 9, 11- 12-
बुध	1, 2- 3- 7- 11,
गुरु	1- 6, 8- 9,
शुक्र	1, 5- 6- 9- 10- 11,
शनि	1, 2- 3- 6, 8-
राहु	7- 11, 12,
केतु	4- 6, 7, 11- 12-

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	मंगल
लग्न राशि स्वामी	शनि
राशि नक्षत्र स्वामी	सूर्य
राशि स्वामी	शुक्र
वार स्वामी	शनि
लग्न अन्तर स्वामी	गुरु
राशि अन्तर स्वामी	शनि

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	शुक्र
लग्न राशि स्वामी	गुरु
राशि नक्षत्र स्वामी	मंगल
राशि स्वामी	शुक्र
वार स्वामी	गुरु
लग्न अन्तर स्वामी	गुरु
राशि अन्तर स्वामी	गुरु

विंशोत्तरी दशा

सूर्य 2 वर्ष 10 मास 2 दिन

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष	
09/07/1988		13/05/1991		12/05/2001	
13/05/1991		12/05/2001		12/05/2008	
	00/00/0000	चंद्र	12/03/1992	मंगल	08/10/2001
	00/00/0000	मंगल	11/10/1992	राहु	27/10/2002
	00/00/0000	राहु	12/04/1994	गुरु	03/10/2003
	00/00/0000	गुरु	12/08/1995	शनि	11/11/2004
	09/07/1988	शनि	12/03/1997	बुध	08/11/2005
शनि	28/02/1989	बुध	12/08/1998	केतु	06/04/2006
बुध	05/01/1990	केतु	13/03/1999	शुक्र	06/06/2007
केतु	12/05/1990	शुक्र	11/11/2000	सूर्य	12/10/2007
शुक्र	13/05/1991	सूर्य	12/05/2001	चंद्र	12/05/2008

राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष	
12/05/2008		12/05/2026		12/05/2042	
12/05/2026		12/05/2042		12/05/2061	
राहु	23/01/2011	गुरु	30/06/2028	शनि	15/05/2045
गुरु	18/06/2013	शनि	11/01/2031	बुध	23/01/2048
शनि	24/04/2016	बुध	18/04/2033	केतु	03/03/2049
बुध	11/11/2018	केतु	25/03/2034	शुक्र	03/05/2052
केतु	30/11/2019	शुक्र	23/11/2036	सूर्य	15/04/2053
शुक्र	29/11/2022	सूर्य	11/09/2037	चंद्र	14/11/2054
सूर्य	24/10/2023	चंद्र	11/01/2039	मंगल	24/12/2055
चंद्र	24/04/2025	मंगल	18/12/2039	राहु	30/10/2058
मंगल	12/05/2026	राहु	12/05/2042	गुरु	12/05/2061

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष	
12/05/2061		12/05/2078		12/05/2085	
12/05/2078		12/05/2085		13/05/2105	
बुध	09/10/2063	केतु	09/10/2078	शुक्र	11/09/2088
केतु	05/10/2064	शुक्र	09/12/2079	सूर्य	11/09/2089
शुक्र	06/08/2067	सूर्य	14/04/2080	चंद्र	13/05/2091
सूर्य	11/06/2068	चंद्र	14/11/2080	मंगल	12/07/2092
चंद्र	11/11/2069	मंगल	12/04/2081	राहु	13/07/2095
मंगल	08/11/2070	राहु	30/04/2082	गुरु	13/03/2098
राहु	27/05/2073	गुरु	06/04/2083	शनि	13/05/2101
गुरु	02/09/2075	शनि	15/05/2084	बुध	13/03/2104
शनि	12/05/2078	बुध	12/05/2085	केतु	13/05/2105

मंगल 5 वर्ष 5 मास 14 दिन

मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
10/12/1992		26/05/1998		25/05/2016	
26/05/1998		25/05/2016		25/05/2032	
	00/00/0000	राहु	05/02/2001	गुरु	14/07/2018
	10/12/1992	गुरु	02/07/2003	शनि	24/01/2021
गुरु	16/10/1993	शनि	08/05/2006	बुध	02/05/2023
शनि	25/11/1994	बुध	24/11/2008	केतु	07/04/2024
बुध	22/11/1995	केतु	13/12/2009	शुक्र	07/12/2026
केतु	19/04/1996	शुक्र	12/12/2012	सूर्य	25/09/2027
शुक्र	19/06/1997	सूर्य	06/11/2013	चंद्र	24/01/2029
सूर्य	25/10/1997	चंद्र	08/05/2015	मंगल	31/12/2029
चंद्र	26/05/1998	मंगल	25/05/2016	राहु	25/05/2032

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष	
25/05/2032		26/05/2051		25/05/2068	
26/05/2051		25/05/2068		26/05/2075	
शनि	29/05/2035	बुध	22/10/2053	केतु	22/10/2068
बुध	05/02/2038	केतु	19/10/2054	शुक्र	22/12/2069
केतु	17/03/2039	शुक्र	19/08/2057	सूर्य	29/04/2070
शुक्र	17/05/2042	सूर्य	25/06/2058	चंद्र	28/11/2070
सूर्य	29/04/2043	चंद्र	25/11/2059	मंगल	26/04/2071
चंद्र	27/11/2044	मंगल	21/11/2060	राहु	13/05/2072
मंगल	06/01/2046	राहु	10/06/2063	गुरु	19/04/2073
राहु	12/11/2048	गुरु	15/09/2065	शनि	29/05/2074
गुरु	26/05/2051	शनि	25/05/2068	बुध	26/05/2075

शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष	
26/05/2075		26/05/2095		27/05/2101	
26/05/2095		27/05/2101		27/05/2111	
शुक्र	25/09/2078	सूर्य	13/09/2095	चंद्र	27/03/2102
सूर्य	25/09/2079	चंद्र	13/03/2096	मंगल	26/10/2102
चंद्र	26/05/2081	मंगल	19/07/2096	राहु	26/04/2104
मंगल	26/07/2082	राहु	13/06/2097	गुरु	26/08/2105
राहु	26/07/2085	गुरु	01/04/2098	शनि	27/03/2107
गुरु	26/03/2088	शनि	14/03/2099	बुध	26/08/2108
शनि	26/05/2091	बुध	19/01/2100	केतु	27/03/2109
बुध	26/03/2094	केतु	26/05/2100	शुक्र	26/11/2110
केतु	26/05/2095	शुक्र	27/05/2101	सूर्य	27/05/2111

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र	
24/04/2016		11/11/2018		30/11/2019	
11/11/2018		30/11/2019		29/11/2022	
बुध	03/09/2016	केतु	03/12/2018	शुक्र	30/05/2020
केतु	27/10/2016	शुक्र	05/02/2019	सूर्य	24/07/2020
शुक्र	31/03/2017	सूर्य	24/02/2019	चंद्र	23/10/2020
सूर्य	17/05/2017	चंद्र	28/03/2019	मंगल	26/12/2020
चंद्र	02/08/2017	मंगल	20/04/2019	राहु	09/06/2021
मंगल	26/09/2017	राहु	16/06/2019	गुरु	02/11/2021
राहु	12/02/2018	गुरु	06/08/2019	शनि	24/04/2022
गुरु	17/06/2018	शनि	06/10/2019	बुध	26/09/2022
शनि	11/11/2018	बुध	30/11/2019	केतु	29/11/2022

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध	
25/05/2016		14/07/2018		24/01/2021	
14/07/2018		24/01/2021		02/05/2023	
गुरु	06/09/2016	शनि	07/12/2018	बुध	21/05/2021
शनि	08/01/2017	बुध	17/04/2019	केतु	09/07/2021
बुध	28/04/2017	केतु	10/06/2019	शुक्र	24/11/2021
केतु	13/06/2017	शुक्र	11/11/2019	सूर्य	04/01/2022
शुक्र	20/10/2017	सूर्य	28/12/2019	चंद्र	14/03/2022
सूर्य	28/11/2017	चंद्र	14/03/2020	मंगल	01/05/2022
चंद्र	01/02/2018	मंगल	07/05/2020	राहु	02/09/2022
मंगल	19/03/2018	राहु	23/09/2020	गुरु	22/12/2022
राहु	14/07/2018	गुरु	24/01/2021	शनि	02/05/2023

राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल	
29/11/2022		24/10/2023		24/04/2025	
24/10/2023		24/04/2025		12/05/2026	
सूर्य	16/12/2022	चंद्र	09/12/2023	मंगल	16/05/2025
चंद्र	12/01/2023	मंगल	10/01/2024	राहु	13/07/2025
मंगल	31/01/2023	राहु	01/04/2024	गुरु	02/09/2025
राहु	22/03/2023	गुरु	13/06/2024	शनि	02/11/2025
गुरु	04/05/2023	शनि	08/09/2024	बुध	26/12/2025
शनि	25/06/2023	बुध	24/11/2024	केतु	17/01/2026
बुध	11/08/2023	केतु	26/12/2024	शुक्र	22/03/2026
केतु	30/08/2023	शुक्र	27/03/2025	सूर्य	10/04/2026
शुक्र	24/10/2023	सूर्य	24/04/2025	चंद्र	12/05/2026

गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
02/05/2023		07/04/2024		07/12/2026	
07/04/2024		07/12/2026		25/09/2027	
केतु	22/05/2023	शुक्र	16/09/2024	सूर्य	21/12/2026
शुक्र	18/07/2023	सूर्य	04/11/2024	चंद्र	15/01/2027
सूर्य	04/08/2023	चंद्र	24/01/2025	मंगल	01/02/2027
चंद्र	01/09/2023	मंगल	22/03/2025	राहु	17/03/2027
मंगल	21/09/2023	राहु	15/08/2025	गुरु	25/04/2027
राहु	11/11/2023	गुरु	23/12/2025	शनि	10/06/2027
गुरु	26/12/2023	शनि	26/05/2026	बुध	21/07/2027
शनि	18/02/2024	बुध	11/10/2026	केतु	07/08/2027
बुध	07/04/2024	केतु	07/12/2026	शुक्र	25/09/2027

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध	
12/05/2026		30/06/2028		11/01/2031	
30/06/2028		11/01/2031		18/04/2033	
गुरु	24/08/2026	शनि	23/11/2028	बुध	08/05/2031
शनि	26/12/2026	बुध	03/04/2029	केतु	25/06/2031
बुध	15/04/2027	केतु	27/05/2029	शुक्र	10/11/2031
केतु	30/05/2027	शुक्र	28/10/2029	सूर्य	22/12/2031
शुक्र	07/10/2027	सूर्य	14/12/2029	चंद्र	29/02/2032
सूर्य	15/11/2027	चंद्र	01/03/2030	मंगल	17/04/2032
चंद्र	19/01/2028	मंगल	24/04/2030	राहु	19/08/2032
मंगल	05/03/2028	राहु	10/09/2030	गुरु	08/12/2032
राहु	30/06/2028	गुरु	11/01/2031	शनि	18/04/2033

गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु	
25/09/2027		24/01/2029		31/12/2029	
24/01/2029		31/12/2029		25/05/2032	
चंद्र	05/11/2027	मंगल	13/02/2029	राहु	11/05/2030
मंगल	03/12/2027	राहु	05/04/2029	गुरु	05/09/2030
राहु	14/02/2028	गुरु	20/05/2029	शनि	22/01/2031
गुरु	19/04/2028	शनि	13/07/2029	बुध	26/05/2031
शनि	05/07/2028	बुध	31/08/2029	केतु	16/07/2031
बुध	12/09/2028	केतु	20/09/2029	शुक्र	09/12/2031
केतु	10/10/2028	शुक्र	15/11/2029	सूर्य	22/01/2032
शुक्र	31/12/2028	सूर्य	02/12/2029	चंद्र	04/04/2032
सूर्य	24/01/2029	चंद्र	31/12/2029	मंगल	25/05/2032

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
18/04/2033		25/03/2034		23/11/2036	
25/03/2034		23/11/2036		11/09/2037	
केतु	08/05/2033	शुक्र	03/09/2034	सूर्य	07/12/2036
शुक्र	03/07/2033	सूर्य	22/10/2034	चंद्र	01/01/2037
सूर्य	21/07/2033	चंद्र	11/01/2035	मंगल	18/01/2037
चंद्र	18/08/2033	मंगल	09/03/2035	राहु	03/03/2037
मंगल	07/09/2033	राहु	02/08/2035	गुरु	10/04/2037
राहु	28/10/2033	गुरु	10/12/2035	शनि	27/05/2037
गुरु	12/12/2033	शनि	12/05/2036	बुध	07/07/2037
शनि	04/02/2034	बुध	27/09/2036	केतु	24/07/2037
बुध	25/03/2034	केतु	23/11/2036	शुक्र	11/09/2037

शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु	
25/05/2032		29/05/2035		05/02/2038	
29/05/2035		05/02/2038		17/03/2039	
शनि	15/11/2032	बुध	16/10/2035	केतु	01/03/2038
बुध	20/04/2033	केतु	12/12/2035	शुक्र	07/05/2038
केतु	23/06/2033	शुक्र	24/05/2036	सूर्य	28/05/2038
शुक्र	23/12/2033	सूर्य	12/07/2036	चंद्र	30/06/2038
सूर्य	16/02/2034	चंद्र	02/10/2036	मंगल	24/07/2038
चंद्र	19/05/2034	मंगल	28/11/2036	राहु	23/09/2038
मंगल	22/07/2034	राहु	25/04/2037	गुरु	16/11/2038
राहु	03/01/2035	गुरु	03/09/2037	शनि	19/01/2039
गुरु	29/05/2035	शनि	05/02/2038	बुध	17/03/2039

गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु	
11/09/2037		11/01/2039		18/12/2039	
11/01/2039		18/12/2039		12/05/2042	
चंद्र	21/10/2037	मंगल	31/01/2039	राहु	27/04/2040
मंगल	19/11/2037	राहु	23/03/2039	गुरु	22/08/2040
राहु	31/01/2038	गुरु	07/05/2039	शनि	08/01/2041
गुरु	06/04/2038	शनि	30/06/2039	बुध	12/05/2041
शनि	22/06/2038	बुध	18/08/2039	केतु	02/07/2041
बुध	30/08/2038	केतु	07/09/2039	शुक्र	25/11/2041
केतु	27/09/2038	शुक्र	02/11/2039	सूर्य	08/01/2042
शुक्र	18/12/2038	सूर्य	19/11/2039	चंद्र	22/03/2042
सूर्य	11/01/2039	चंद्र	18/12/2039	मंगल	12/05/2042

शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र	
17/03/2039		17/05/2042		29/04/2043	
17/05/2042		29/04/2043		27/11/2044	
शुक्र	26/09/2039	सूर्य	03/06/2042	चंद्र	16/06/2043
सूर्य	23/11/2039	चंद्र	02/07/2042	मंगल	20/07/2043
चंद्र	27/02/2040	मंगल	22/07/2042	राहु	15/10/2043
मंगल	05/05/2040	राहु	12/09/2042	गुरु	31/12/2043
राहु	25/10/2040	गुरु	29/10/2042	शनि	31/03/2044
गुरु	28/03/2041	शनि	23/12/2042	बुध	21/06/2044
शनि	28/09/2041	बुध	10/02/2043	केतु	25/07/2044
बुध	10/03/2042	केतु	02/03/2043	शुक्र	29/10/2044
केतु	17/05/2042	शुक्र	29/04/2043	सूर्य	27/11/2044

शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु	
12/05/2042		15/05/2045		23/01/2048	
15/05/2045		23/01/2048		03/03/2049	
शनि	02/11/2042	बुध	01/10/2045	केतु	16/02/2048
बुध	07/04/2043	केतु	28/11/2045	शुक्र	23/04/2048
केतु	10/06/2043	शुक्र	11/05/2046	सूर्य	14/05/2048
शुक्र	10/12/2043	सूर्य	29/06/2046	चंद्र	16/06/2048
सूर्य	03/02/2044	चंद्र	19/09/2046	मंगल	10/07/2048
चंद्र	05/05/2044	मंगल	15/11/2046	राहु	09/09/2048
मंगल	08/07/2044	राहु	12/04/2047	गुरु	02/11/2048
राहु	20/12/2044	गुरु	21/08/2047	शनि	05/01/2049
गुरु	15/05/2045	शनि	23/01/2048	बुध	03/03/2049

शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु	
27/11/2044		06/01/2046		12/11/2048	
06/01/2046		12/11/2048		26/05/2051	
मंगल	21/12/2044	राहु	11/06/2046	गुरु	15/03/2049
राहु	19/02/2045	गुरु	28/10/2046	शनि	09/08/2049
गुरु	14/04/2045	शनि	11/04/2047	बुध	18/12/2049
शनि	18/06/2045	बुध	05/09/2047	केतु	10/02/2050
बुध	14/08/2045	केतु	05/11/2047	शुक्र	14/07/2050
केतु	07/09/2045	शुक्र	26/04/2048	सूर्य	29/08/2050
शुक्र	13/11/2045	सूर्य	17/06/2048	चंद्र	14/11/2050
सूर्य	03/12/2045	चंद्र	12/09/2048	मंगल	07/01/2051
चंद्र	06/01/2046	मंगल	12/11/2048	राहु	26/05/2051

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

9	मूलांक	1
6	भाग्यांक	7
1, 3, 6, 9	मित्र अंक	1, 4, 8, 9, 7
4, 5, 8	शत्रु अंक	3, 5, 6
27,36,45,54,63	शुभ वर्ष	19,28,37,46,55
शुक्र, शनि, बुध	शुभ दिन	रवि, गुरु, मंगल
शुक्र, शनि, बुध	शुभ ग्रह	सूर्य, गुरु, मंगल
मकर, कुम्भ	मित्र राशि	मकर, कुम्भ
मेष, कन्या, वृश्चिक	मित्र लग्न	मीन, सिंह, तुला
विष्णु	अनुकूल देवता	विष्णु
नीलम	शुभ रत्न	पुखराज
जमुनिया, बिलौर	शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
पन्ना	भाग्य रत्न	माणिक्य
लौह	शुभ धातु	कांसा
काला	शुभ रंग	पीत
पश्चिम	शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
संध्या	शुभ समय	संध्या
कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह	दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
उड़द	दान अन्न	दाल चना
तेल	दान द्रव्य	घी

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री - Pradeep

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम
चंद्र	अतिमित्र	---	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	सम	अतिमित्र	मित्र	मित्र	सम	सम
बुध	सम	सम	मित्र	---	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
गुरु	अतिमित्र	सम	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र
शुक्र	सम	अधिशत्रु	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	---	सम	अतिमित्र	अतिमित्र
शनि	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	सम	शत्रु	सम	---	अतिमित्र	अधिशत्रु
राहु	अधिशत्रु	सम	सम	शत्रु	मित्र	अतिमित्र	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	सम	सम	सम	मित्र	मित्र	अतिमित्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---

पंचधा मैत्री - Vishakha

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	सम	शत्रु	अतिमित्र	सम	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु
चंद्र	सम	---	मित्र	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु
मंगल	सम	अतिमित्र	---	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	सम	अधिशत्रु	शत्रु	---	मित्र	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
गुरु	अतिमित्र	सम	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	सम	अधिशत्रु	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	---	सम	अतिमित्र	सम
शनि	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	सम	---	अतिमित्र	अधिशत्रु
राहु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	शत्रु	मित्र	अतिमित्र	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---

रत्न चयन

किसी भी कुंडली में दशानुसार ग्रह का उपाय एवं रत्न धारण करने से शुभत्व में वृद्धि होती है। वैज्ञानिक रूप से विशिष्ट ग्रह का मंत्रोच्चारण करने से उस ग्रह की रश्मियों की मानव शरीर के चारों ओर सुरक्षा श्रृंखला बन जाती है एवं रत्न रश्मियों को सोखकर मानव शरीर में प्रवाहित कर शुभत्व में वृद्धि करता है। अतः रत्न का बेदाग होना एवं शरीर से स्पर्श करना अत्यंत आवश्यक माना गया है।

सामान्यतया उपाय ग्रह दशा के फल की वृद्धि के लिए महादशा स्वामी का किया जाता है। उपाय में मंत्रोच्चारण, दान एवं व्रत ही प्रमुख हैं। रत्न निर्बल परंतु लग्नेश, भाग्येश या योगकारक ग्रहों का पहना जाता है। आपको कब कौन सा उपाय या रत्न धारण करना चाहिए नीचे तालिका में उसके कार्यसिद्धि क्षेत्र सहित दिया गया है। महादशाओं में रत्नों के तीन-तीन विकल्प दिए गए हैं। आपको कोई भी विकल्प उसकी कार्यसिद्धि क्षेत्र एवं क्षमता देखकर अपनी आवश्यकतानुसार पहन सकते हैं तथा अतिरिक्त उपाय भी अपनी क्षमतानुसार कर सकते हैं।

Pradeep

जीवन रत्नः	नीलम	कम खर्च, स्वास्थ्य, धन
भाग्य रत्नः	पन्ना	शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
कारक रत्नः	हीरा	सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति

Vishakha

जीवन रत्नः	पुखराज	व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य, सुख
भाग्य रत्नः	माणिक्य	कम खर्च, भाग्योदय
कारक रत्नः	मूंगा	दुर्घटना से बचाव, सन्तति सुख, कम खर्च

रत्न	ग्रह	रत्ती	धातु	अंगुली	दिन	समय	नक्षत्र
माणिक्य	सूर्य	4	सोना	अना	रविवार	सुबह	कृतिका, उ०फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा
मोती	चन्द्र	4	चांदी	कनि	सोमवार	सुबह	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	मंगल	6	चांदी	अना	मंगलवार	सुबह	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
पन्ना	बुध	4	सोना	कनि	बुधवार	सुबह	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	गुरु	4	सोना	तर्जन	गुरुवार	सुबह	पुनर्वसु, विशाखा, पू०भाद्रपद
हीरा	शुक्र	1	प्लेटि	कनि	शुक्रवार	सुबह	भरणी, पू०फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा
नीलम	शनि	4	पंचधातु	मध्य	शनिवार	शाम	पुष्य, अनुराधा, उ०भाद्रपद
गोमेद	राहु	5	अष्टधातु	मध्य	शनिवार	रात्रि	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा
लहसुनिया	केतु	6	चांदी	अना	गुरुवार	रात्रि	अश्विनी, मघा, मूल

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	09/07/1988-20/03/1990
साढेसाती प्रथम ढैया	16/04/1998-05/06/2000
साढेसाती द्वितीय ढैया	05/06/2000-22/07/2002
साढेसाती तृतीय ढैया	22/07/2002-05/09/2004
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	01/11/2006-09/09/2009

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	19/01/2017-18/01/2020
साढेसाती प्रथम ढैया	26/10/2027-11/04/2030
साढेसाती द्वितीय ढैया	11/04/2030-25/05/2032
साढेसाती तृतीय ढैया	25/05/2032-06/07/2034
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	20/08/2036-29/06/2039

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/11/2046-20/07/2049
साढेसाती प्रथम ढैया	01/04/2057-22/05/2059
साढेसाती द्वितीय ढैया	22/05/2059-05/07/2061
साढेसाती तृतीय ढैया	05/07/2061-15/02/2064
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	03/10/2065-21/08/2068

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	कम खर्च
साढेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	सुख हानि
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	सन्तति सुख
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	शत्रु व रोग
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	दुर्घटना

प्रथम चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	16/04/1998-05/06/2000
साढेसाती द्वितीय ढैया	05/06/2000-22/07/2002
साढेसाती तृतीय ढैया	22/07/2002-05/09/2004
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	01/11/2006-09/09/2009
अष्टम स्थानस्थ ढैया	19/01/2017-18/01/2020

द्वितीय चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	26/10/2027-11/04/2030
साढेसाती द्वितीय ढैया	11/04/2030-25/05/2032
साढेसाती तृतीय ढैया	25/05/2032-06/07/2034
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	20/08/2036-29/06/2039
अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/11/2046-20/07/2049

तृतीय चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	01/04/2057-22/05/2059
साढेसाती द्वितीय ढैया	22/05/2059-05/07/2061
साढेसाती तृतीय ढैया	05/07/2061-15/02/2064
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	03/10/2065-21/08/2068
अष्टम स्थानस्थ ढैया	04/08/2076-03/01/2079

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	सन्तति कष्ट
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	शत्रु व रोग मुक्ति
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	दम्पति
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	बदनामी
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	स्वास्थ्य

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त

किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

Pradeep

आपकी जन्मकुण्डली में कुलिक नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्य मान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। इस योग के कारण जातक के खर्च सामान्य से कुछ अधिक रहता है। जिससे आर्थिक क्लेश समय-समय पर होता रहता है। सुख का थोड़ा अभाव रहता है।

इस योग के कारण जातक के जीवन में समय-समय पर संघर्ष करना पड़ता हैऔर स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव आती रहती है एवं स्वास्थ्य में गिरावट के कारण जातक अपने भविष्य (वृद्धावस्था) को लेकर चिन्तित रहता है। जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी कभी अशान्त हो जाता है। मित्रगण समय पर थोड़ा बहुत धोखा देते हैं और जातक को अपने परिवार के सदस्यों से कभी मनमुटाव हो जाता है।

इस योग के कारण जातक को सन्तान सुख में थोड़ा बहुत बाधा रहती है। पुत्र होकर भी आज्ञा का प्रायः पालन नहीं करता और सन्तान प्रायः क्रूर एवं दुष्ट स्वभाव का हो जाता है। कभी-कभी भूत प्रेतों से जातक परेशान होता है। जीवन का उत्तरार्ध थोड़ा बहुत कष्टमय व्यतीत होता है एवं जातक मानसिक रूप से परेशानी महसूस करता है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक को व्यापार में मनोवांछित सफलता प्राप्त होती है और अपने जीवन में अनेक सम्मान भी प्राप्त करता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।

11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

Vishakha

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	वैश्य	वैश्य	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	चतुष्पाद	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	मित्र	विपत	3	1.50	--	भाग्य
योनि	मेष	सर्प	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	शुक्र	शुक्र	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	देव	6	1.00	--	सामाजिकता
भकूट	वृष	वृष	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	27.50		

Pradeep का वर्ग गरूड़ है तथा Vishakha का वर्ग मृग है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Pradeep और Vishakha का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

Pradeep मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है।

Vishakha मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

भौमेः वक्रिणि नीचगृहे वाऽर्कस्थेऽपि वा न कुजदोषः।

अर्थात् यदि मंगल वक्री, नीच, अस्त का हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल Vishakha कि कुण्डली में नीच का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल Pradeep कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

Pradeep तथा Vishakha में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

Pradeep का वर्ण वैश्य है तथा Vishakha का वर्ण भी वैश्य है। इसमें दोनों का वर्ण समान है अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। इसके कारण Pradeep और Vishakha दोनों की सोच भौतिकवादी सोच होगी तथा रूपये-पैसे को ज्यादा महत्व देंगे। Pradeep और Vishakha दोनों मितव्ययी होंगे तथा भविष्य के लिए धन का संचय करना पसन्द करेंगे। साथ ही दोनों एक-दूसरे के विचारों का सम्मान कर तथा आपस में विचार-विमर्श करके ही बुद्धिमत्तापूर्वक निवेश करेंगे।

वश्य

Pradeep का वश्य चतुष्पद है एवं Vishakha का वश्य भी चतुष्पद है अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके फलस्वरूप Pradeep एवं Vishakha दोनों के स्वभाव, पसंद एक समान होंगे तथा आपसी तालमेल काफी अच्छा रहेगा, जिससे परिवार में सुख, शांति एवं समृद्धि का मार्ग प्रशस्त होता रहेगा। दोनों के बीच अत्यधिक प्रेम की भावना भी बनी रहेगी।

तारा

Pradeep की तारा मित्र तथा Vishakha की तारा विपत है। Vishakha की तारा विपत होने के कारण यह मिलान औसत मिलान ही है। यह मिलान Pradeep एवं उसके परिवार के लिए दुर्भाग्य एवं नुकसान का कारण बन सकता है। परन्तु कड़े एवं लगातार प्रयासों के बाद परिणाम सुखदायी हो सकता है। संभव है कि Vishakha का रुख सहयोगात्मक नहीं हो तथा आपसी विश्वास, प्रेम एवं समझ की कमी बनी रहे। अक्सर पति एवं पत्नी के बीच संघर्ष एवं लड़ाई-झगड़े रह सकते हैं तथा बच्चे भी इसका गलत फायदा उठायेंगे। जिसके कारण संभव है कि बच्चे योग्य एवं आज्ञाकारी नहीं हों।

योनि

Pradeep की योनि मेष है तथा Vishakha की योनि सर्प है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं हैं और इनके बीच उदासीनता का अर्थात सम संबंध है। अतः यह मिलान औसत मिलान कहलायेगा। जिसके कारण दोनों के बीच आपसी समझबूझ का अभाव रहेगा तथा जीवन में सहयोग की भावना एवं प्रेम का अभाव भी बना रहेगा। दोनों के बीच अक्सर लड़ाई झगड़े होंगे तथा परिवार में तनाव तथा अशांति का भाव भी रह सकता है। साथ ही दोनों के बीच अविश्वास की भावना भी बनी रहेगी। दोनों एक दूसरे को संदेह की भावना से देखेंगे जिससे दोनों के बीच कटुता का भाव भी पैदा होगा। दोनों के बीच आपसी समझ की कमी भी रहेगी अतः दोनों के बीच वैचारिक मतभेद भी हो सकते हैं। संभव है कि दोनों के बीच अवैध संबंध को लेकर संदेह की भावना बन जाये जिसके कारण पारिवारिक तनाव भी हो सकता है। बात-बात में दोनों के बीच में कभी कभी तर्क-वितर्क की जगह कुतर्क भी हो सकता है। वर या कन्या में से कोई भी विश्वासघात भी कर सकता है। जिसके कारण दोनों के बीच लड़ाई झगड़ा भी हो सकता है। इनको अपने जीवन में अत्याधिक संघर्ष के उपरांत ही सफलता प्राप्त होगी अतः कठिन

की आवश्यकता पड़ेगी। इसके बावजूद इनको अपने जीवन में सफलता कम ही मिलेगी। अर्थात मेहनत अधिक और परिणाम कम ही मिलने की संभावना है। जिसके कारण दोनों को समय-समय पर मानसिक पीड़ा होती रहेगी। पारिवारिक आय औसत ही रहेगी। अर्थात धनागम के स्रोत कम ही रहेंगे। पति-पत्नी के बीच विचारों में भिन्नता होगी एवं जीवन में उतार-चढ़ाव बने रहेंगे। दोनों लापरवाह प्रवृत्ति के होंगे किंतु परिवार के प्रति कर्तव्यनिष्ठ रहेंगे। दोनों के बीच रोमांस एवं सेक्स में रुचि की कमी भी रह सकती है। कई बार वाद-विवाद में तर्क-वितर्क होते रहेंगे। जिसके कारण समय-समय पर धन हानि भी हो सकती है। आपस में प्रेम एवं सौहार्द्र की भी कमी रहेगी। इस प्रकार इनका वैवाहिक जीवन बहुत अच्छा न रहकर निम्न सामान्य स्तर का ही होगा।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में Pradeep एवं Vishakha दोनों के राशि स्वामी समान हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अति उत्तम मिलान है। ज्यातिष की दृष्टि से यदि Pradeep एवं Vishakha दोनों के राशि स्वामी एक ही होने के कारण कुंडली मिलान में इसे अति उत्तम माना जाता है तथा पूरे 5 अंक प्रदान किए जाते हैं। जिसके कारण दोनों में असीम प्रेम बना रहेगा तथा साथ ही दोनों जीवन के हर क्षेत्र में एक-दूसरे का सहयोग करते रहेंगे। इनका प्रयास रहेगा कि वे स्वयं को आदर्श दम्पत्ति साबित कर सकें। इनके बच्चे योग्य, आज्ञाकारी, सफल एवं यशस्वी होंगे।

गण

Pradeep का गण राक्षस तथा Vishakha का गण देव है। अर्थात Vishakha का गण Pradeep के गण से श्रेष्ठ है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। जिसके कारण Pradeep निर्दयी, कठोर, निष्ठुर एवं झगड़ालू हो सकते हैं। साथ ही Pradeep का Vishakha के साथ क्रूर व्यवहार करने की संभावना बनी रह सकती है। पति-पत्नी, अक्सर कुत्ते-बिल्लियों की भांति झगड़ा कर सकते हैं एवं परिवार में अक्सर अशांति का माहौल बना रहेगा। Vishakha हमेशा हर कदम पर समझौता करने की कोशिश करती रहेगी ताकि दोनों का संबंध बना रहे।

भकूट

Pradeep एवं Vishakha दोनों की राशि एक समान ही है इसलिये यह अति उत्तम मिलान है। ऐसा मिलान Pradeep एवं Vishakha तथा परिवार के चतुर्दिक विकास के मार्ग को प्रशस्त करता है। इन्हें अनेक रूपों में ईश्वरीय कृपा जैसे - सौभाग्य, सम्पत्ति, समाज में मान-सम्मान तथा योग्य संतान आदि प्राप्त होगी।

नाड़ी

Pradeep की नाड़ी अन्त्य है तथा Vishakha की नाड़ी मध्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान नहीं है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोष मुक्त है। अर्थात यह मिलान अति उत्तम मिलान है। अन्त्य एवं मध्य नाड़ी दो महत्वपूर्ण जीवनी शक्तियों पित्त एवं कफ की कारक हैं।

जिसके कारण दम्पत्ति का परस्पर प्रेम, अनुकूलता, अच्छा भविष्य, सहयोग की भावना बनी रहेगी। आपकी संतान शक्तिशाली, बुद्धिमान, आज्ञाकारी एवं भाग्यशाली होंगी।

मेलापक फलित

स्वभाव

Pradeep और Vishakha का मिलान उत्तम रहेगा तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर इनमें समानता रहेगी। Pradeep और Vishakha दोनों भूमितत्व राशि वृष राशि के है । अतः स्वाभाविक दृष्टिकोण तथा उनके जीवन के दर्शन में समानता रहेगी तथा आदर्शवाद भी उनमें विद्यमान रहेगा। साथ ही दोनों की प्रवृति शांत प्रिय रहेगी फलतः दाम्पत्य सुख शांति एवं समृद्धि से युक्त होकर व्यतीत होगा।

Pradeep और Vishakha की राशि का स्वामी शुक्र है। अतः शुक्र के प्रभाव से दोनों आदर्श प्रेमी होंगे तथा संगीत के प्रति पूर्ण रूप से रूचिशील रहेंगे। आप दोनो संगीत के द्वारा जीवन में रोमांस आनंद एवं शांति की अनुभूति करेंगे तथा विवाद के समय संगीत द्वारा आपके मतभेद दूर होंगे।

Pradeep और Vishakha दोनों की राशि परस्पर प्रथम-प्रथम भाव में पड़ती है। यह शुभ भकूट होता है। इसके प्रभाव से Pradeep एक सहृदय व्यक्ति होंगे तथा सरलता का भाव उनमें विद्यमान रहेगा। Vishakha की रूचि पाकशास्त्र के प्रति रहेगी तथा स्वादिष्ट व्यंजन बनाने में दक्ष रहेंगी फलतः दोनों के संबधों में परस्पर प्रगाढ़ता रहेगी। इसके अतिरिक्त छोटे मोटे विवादों का आपसी समझ बूझ से हल करके अपना समय शांति पूर्वक व्यतीत करेंगे।

Pradeep और Vishakha दोनों का वश्य चतुष्पद है। अतः इनकी अभिरूचियों में समानता होगी तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक संबधों में भी समता रहेगी फलतः आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा एवं काम संबधों में एक दूसरे को प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रखने में समर्थ होंगे जिससे आंतरिक प्रसन्नता भी बनी रहेगी।

Pradeep और Vishakha दोनों का वर्ण वैश्य है। अतः दोनों व्यापारिक बुद्धि से कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे तथा धनार्जन में नित्य तत्पर रहेंगे जिससे आर्थिक स्थिति में सुदृढ़ता रहेगी तथा दाम्पत्य संबध मधुरता से पूर्ण रहेंगे।

धन

Pradeep और Vishakha दोनों की तारा परस्पर सम है। अतः आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा सामान्य गति से धन एवं लाभ अर्जित करने में दोनों तत्पर रहेंगे। भकूट भी सम ही रहेगा जिससे उनके लाभमार्ग स्वबुद्धिमता एवं परिश्रम से प्रशस्त रहेंगे। मंगल का भी उनकी आर्थिक स्थिति पर कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। इस प्रकार उनके अर्थिक स्तर पर कोई विशेष नाटकीय परिवर्तन की संभावना नहीं होगी परन्तु सामान्य जीवन धनऐश्वर्य से युक्त होकर व्यतीत होगा।

इसके साथ ही कोई विशेष या अचानक लाभ के योगों में भी न्यूनता होगी तथा आर्थिक स्तर अपने ही अनुकूल रहेगा जिससे वे आर्थिक रूप से सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

स्वास्थ्य

Pradeep की नाड़ी अन्त्य तथा Vishakha की नाड़ी मध्य है। अतः इन पर नाड़ी दोष का कोई प्रभाव नहीं होगा तथा स्वास्थ्य इस ओर से सामान्य रहेगा परन्तु मंगल के प्रभाव से Pradeep का स्वास्थ्य प्रभावित होगा एवं समय समय पर वे हृदय रोग संबंधी परेशानी प्राप्त करेंगे। साथ ही पित या रक्त संबंधी कष्ट की भी अनुभूति होगी। धातु संबंधी रोगों का भी Pradeep पर प्रभाव रहेगा एवं संभोग किया में भी उन्हें शिथिलता का आभास होगा जिससे दाम्पत्य जीवन में कलह तथा अशांति उत्पन्न हो सकती है। अतः उपरोक्त दोषों में न्यूनता लाने के लिए Pradeep को नियमित रूप से हनुमानजी की पूजा करनी चाहिए तथा मंगलवार के उपवास करने चाहिए। इसके अतिरिक्त मूंगा धारण करना भी Pradeep के लिए श्रेयस्कर रहेगा।

संतान

संतति के दृष्टि से Pradeep एवं Vishakha का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उनको उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म के मध्य अंतर भी अनुकूल रहेगा जिससे उनका उचित पालन पोषण करने में समर्थ होंगे। इसके अतिरिक्त इनकी पुत्र एवं कन्या संतति संख्या भी समान होगी।

यद्यपि Vishakha का प्रसव सामान्य विधि से सम्पन्न होगा परन्तु इसके प्रति Vishakha के मन में कई प्रकार से भय एवं चिन्ता की भावना रहेगी जिससे वे अनावश्यक मानसिक तनाव की अनुभूति करेंगी। अतः Vishakha को चाहिए कि ऐसे अनावश्यक भय एवं चिन्ता से मुक्त रहें तथा नियमित रूप से अपना गर्भावस्था में डाक्टरी परीक्षण आदि करवाती रहें। इससे Vishakha सामान्य रूप से सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी तथा ऐसे समय में स्वयं भी स्वस्थ तथा शांति की अनुभूति करेंगी। Pradeep और Vishakha बच्चों से सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा वे भी अपने क्षेत्र में स्व योग्यता बुद्धिमता तथा व्यवहार कुशलता से प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे तथा अन्य सामाजिक जन भी उनसे प्रभावित तथा प्रसन्न रहेंगे माता पिता के प्रति उनके मन में समान भाव से आदर तथा आज्ञाकारिता रहेगी तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार Pradeep और Vishakha का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा आनंद पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

Vishakha तथा उसकी सास के परस्पर संबध अच्छे नहीं रहेंगे। आयु में अधिक अन्तर होने के कारण इनके गहन मतभेद रहेंगे। लेकिन अन्य कोई भी समस्या इतनी गंभीर नहीं होगी जिनका कोई समाधान न हो। अतः यदि Vishakha धैर्य एवं बुद्धिमता पूर्वक सामंजस्यशील प्रवृति का अनुसरण करें तो सास से संबधों में अनुकूलता आ सकती है। अतः अपनी ओर से उन्हें उनकी पूर्ण रूप से सेवा तथा सुख सुविधाएं प्रदान करनी चाहिए।

ससुर के साथ Vishakha के संबध मधुर रहेंगे तथा अपने विनम्र व्यवहार सम्मान की भावना तथा सेवा की प्रवृति से उन्हें प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रखने में प्रसन्न रहेंगी। लेकिन देवर एवं ननदों से संबधों में प्रतिकूलता रहेगी तथा आपस में ईर्ष्या, प्रतिद्वन्दिता एवं आलोचना का भाव

रहेगा।

इस प्रकार Vishakha का ससुराल में समय सामान्य रूप से ही व्यतीत होगा तथा अन्य जनों को अपनी ओर से सन्तुष्ट रखने में सर्वदा तत्पर रहेंगी।

ससुराल-श्री

Pradeep के अपनी सास से संबधों में मधुरता रहेगी तथा सास को वह अपनी माता के समान पूर्ण आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। वह उन्हें अपने पुत्र के समान समझेंगी तथा उसी प्रकार अपनत्व तथा वात्सल्य प्रदान करेंगी। साथ ही समय समय पर वे सपत्नीक सास से मिलने के लिए ससुराल जाते रहेंगे।

लेकिन ससुर के साथ में Pradeep के संबध अच्छे नहीं रहेंगे। इनकी आयु में अधिक अंतर के कारण वैचारिक तथा सैद्धांतिक मतभेद समय समय पर उत्पन्न होते रहेंगे। लेकिन यदि दोनों सामंजस्य की प्रवृति से कार्य लें तो मतभेदों में न्यूनता आएगी तथा मधुर संबधों में वृद्धि होगी। साथ ही साले एवं सालियों से भी संबधों में तनाव रहेगा तथा मानसिक स्तर पर विभिन्नता रहेगी जिससे एक दूसरे को वांछित सहयोग स्नेह एवं सहानुभूति अल्प ही प्रदान करेंगे। अतः इनको परस्पर सामंजस्य के भाव की स्थापना करनी चाहिए। इस प्रकार ससुराल पक्ष का दृष्टिकोण Pradeep के प्रति सामान्य ही रहेगा।

लग्न फल

Pradeep

आपका जन्म धनिष्ठा नक्षत्र के द्वितीय चरण में मकर लग्न में हुआ था। ज्योतिषीय आकृति से यह स्पष्ट हो रहा है कि आपके जन्मकाल मेदिनीय क्षितिज पर मकर लग्न के साथ-साथ कन्या राशि का नवमांश एवं कन्या राशि का द्रेष्काण भी उदित था। इस संबंधित लग्नादि संयोजनों से ऐसा दृश्य हो रहा है कि आप पर्याप्त साधन संग्रह करने के मामले में बहुत बड़े भाग्यशाली प्राणी हैं। परंतु आपके लिए यह निर्देश अत्यंत ग्राह्यनीय है कि आपकी मनोवृति यह हो सकता है कि शीघ्रतापूर्वक धनी बनने के लिए जूआ, सट्टा आदि खेल कर सफलता पूर्वक धनवान बन सकता हूं। परंतु उत्तम तो यह है कि आप अपनी इस मनोवृति को इस भावना के प्रति मोड़ दे। तथापि आप यदा-कदा लाटरी का टिकट खरीद कर कुछ लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

आप किसी भी विषय को सुदृढ़तापूर्वक समझ जाते हैं। आप अपने लक्ष्य को निर्देश अुनसार प्रेरित होकर किसी भी कार्य कलाप के पीछे साहस पूर्वक दृढ़ संकल्पित होकर संलग्न हो जाते हैं। आपमें ऐसी क्षमता है कि आप स्पष्ट रूप से विचार कर के अपनी कार्य योजना की रूपरेखा प्रस्तुत करते हैं तथा किसी भी प्रकार की भूमिका की सफलता प्राप्ति हेतु छलांग लगाकर प्रयास नहीं करते हैं।

आप सपत्नीक किसी कार्य को विवेकपूर्वक करके अपने कार्य-कलाप की सफलता प्राप्ति हेतु सक्षम हैं। आप अपने जीवन के उत्तम समयावधि में सुमधुर समय पर सावधानी पूर्वक लाभांवित हो सकते हैं। जब आपकी आयु 15 वें वर्ष से 23 वर्ष के मध्य एवं 29 वें वर्ष तक की होगी। वह समय आपके लिए भाग्यशाली प्रमाणित होगा।

इन तीन वर्षो के अंतर्गत आप अपनी संतुष्टि हेतु किसी प्रकार का अनैतिक एवं दुःसाहसिक कार्य न करें। आप इस समय सहजता पूर्वक सुखी एवं संतुष्ट हो जाएंगे।

आप अपने लिए कार्य व्यवसायों में जनरलिस्ट एवं संचार मिडिया का कार्य धर्म एवं दर्शन के कार्य, पुलिस, प्रतिरक्षा की सेवा, खनिज व्यवसाय, चर्मोद्योग कृषि कार्य एवं सामान्य औद्योगिक प्रतिष्ठान की स्थापना आदि कार्यो में से अपनी इच्छानुसार किसी भी कार्य व्यवसाय का चयन कर सकते हैं।

आपमें विद्वेष एवं उच्चाकांक्षा रहती है, जो क्षणिक कार्यकलाप का घोतक है। आप आपने परिवार से अत्यधिक संबद्ध रहने वाले प्राणी हैं। आप अपनी पत्नी एवं बच्चों के प्रति श्रद्धावान होंगे।

उन लोगों की मनोवृत्ति आपसे अधिक आदान-प्रदान करने की रहती हैं, वे अधिक मात्रा में आपसे अपेक्षा करते हैं। इन बातों को आप महसूस करते हैं। सामान्यतः आप अपने पिता (अभिभावक) भाई एवं बहनों के प्रति बहुत स्नेहशील रहने वाले व्यक्ति होंगे।

आपको अपने जीवन में संगीत कला अर्थात् गायन-वादन से युक्त रहना एक अच्छा आनंददायक माहौल रहेगा। आपके बहुत मित्रगण होंगे, जो आपके साथ अपना आनंददायक समय व्यतीत करेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। परंतु अधिक उम्र में ऐसे अवसर आ सकते हैं। जिस समय आपको हृदय संबंधी समस्याएं मूर्छा (बेहोशी) लगातार कफ-सर्दी, जुकाम आदि रोग से आक्रांत हो जाएं। अतः आप समय-समय पर चिकित्सक से जांच-पड़ताल कराते रहें।

आपके लिए रंगों में अनुकूल रंग, सफेद, काला, लाल एवं नीला रंग उत्तम है। परंतु आपके लिए क्रीम एवं पीला रंग अनुपयुक्त एवं अव्यवहारणीय है।

आपके लिए अंकों में अनुकूल एवं निर्भरात्मक अंक 6, 8 एवं 9 अंक लाभदायक प्रमाणित होगा। जबकि आपके लिए अंक 3 सर्वथा त्याज्य एवं अव्यवहारणीय है।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में बुधवार, शुक्रवार एवं शनिवार का दिन शुभ दर्शनीय एवं महत्वपूर्ण कार्य संपादन हेतु अनुकूल है। परंतु रविवार, सोमवार एवं गुरुवार का दिन आपके लिए अनुपयुक्त है।

Vishakha

आपका जन्म पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र के तृतीय चरण में धनु लग्नोदय काल में हुआ था। आपके जन्म लग्न के उदय के साथ-साथ तुला का नवमांश एवं सिंह राशि का द्रेष्काण भी उदित था। आपका यह जन्म लग्नादिक संयोजन आपके आदर्श जीवन की आधारशिला आनंदपूर्ण पराकाष्ठा का सृजन करता है, जो आपके जीवन के लिए सुखद एवं उन्नति कारक प्रतीत होता है। आप स्वाभाविक रूप से निष्कपट महिला है। परंतु जन सामान्य के मध्य "जैसे को तैसा" वाले सिद्धांत की अनुयायी हैं। आप विश्वसनीयता पूर्वक निश्चित जीवन व्यतीत करेंगी।

आप प्रायः सदैव ही अपने पक्ष की रूपरेखा तैयार करने में लगे रहती हैं। आप आकर्षक व्यक्तित्व एवं उत्तम स्वास्थ्य के संबंध में सौभाग्यशाली हैं। आप थोड़ी शिक्षा प्राप्त करके भी बैल की सींग जैसी पैनी कार्य क्षमता द्वारा अपनी सफलता हेतु कार्य संपादन करती रहेंगी। आपमें जन्मजात अंतर्ज्ञान एवं शक्ति विद्यमान है। आप अपनी कार्य योजना के कार्यान्वयन हेतु पूर्व ही सभी तथ्यों का अध्यापन कर हर दृष्टिकोण से तत्पर रहती हैं एवं अपनी कार्य योजना पूर्णरूपेन संपन्न करने में सक्षम हो जाती हैं।

आप किसी भी तरह दो प्रकार चाल की विशेषताओं से मुड़ने की प्रवृति रखती हो। पहली बात तो यह है कि आप जूआ के प्रलोभन में फंसकर संतुष्ट होना चाहती हो। परिणाम स्वरूप क्षति उठानी पड़ती है। दूसरी बात यह कि आप धारा प्रवाह बात चीत करती हो। इस कारण मानवीय स्वाभाविक विश्वसनीयता अन्य लोगों की दृष्टि में नष्ट हो जाती है। आप सदैव स्पष्ट रूप से किसी भी बात को जन सामान्य के मध्य प्रकट कर के अन्यों के द्वारा छेड़-खानी की शिकार बनती हो। आप सदैव अपनी पैनी तीक्ष्ण शाब्दिक उच्चारण करके अन्य लोगों की आत्मा पर चोट पहुंचाती हो। इस कारण आप जब कभी अपना मैत्री पूर्ण अधिकार जताना चाहती

हो तो तुम्हारे मित्र इस बातों का बहिष्कार करते हैं।

आप वैदेशिक लोगों के प्रति आकर्षित रहती हो। आप सदैव उनसे परिचय एवं संपर्क बढ़ाना चाहती हो एवं उनको अपनी दृष्टि में उच्चतम बनाकर अपना लेना चाहती हो। यदि आप सर्तकता पूर्वक वार्तालाप कर सम्पर्क में ले आएं तो यह संभाव्य है कि आप वैदेशिक भ्रमण कार्य पूरा कर सकती हैं।

आप निःसंदेह एक सुंदर भवन की स्वामी होंगे तथा अपनी प्यारी पत्नी एवं व्यवहार कुशल संतान से सुखी रह सकती हैं। परंतु आपमें बाहर भ्रमण करने की प्रवृति विद्यमान है क्योंकि आप खेल-कूद तथा भ्रमण कार्य में व्यस्त रहकर घर से बाहर रहती हैं। अस्तु आप घर-गृहस्थी के लिए सक्षम नहीं हैं।

आपके लिए कार्य व्यवसायों में अनुकूल एवं शानदार कार्य, कंपनी लॉ, वैदेशिक लोगों के साथ व्यापार संबंध स्थापित करना, शैक्षणिक कार्य, राजनीति कार्य एवं शैक्षणिक संबंधी कार्य एवं धार्मिक संस्थान के कार्य उत्तम हैं।

यदि आप निम्नांकित निर्देशों को ध्यान में रखकर कार्यों का प्रस्तुतीकरण करें तो बिना किसी भी व्यवधान के सफल हो जाओगी।

आपके लिए अंको में अंक 3, 5, 6 एवं 8 अंक सर्वथा अनुकरणीय है। परंतु अंक 2, 7 एवं 9 अंक अव्यवहारणीय है।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में गुरुवार, एवं रविवार का दिन अनुकूल एवं शुभ फलदायक हैं, परंतु शुक्रवार एवं शनिवार का दिन आपके लिए प्रतिकूल एवं समस्यापूर्ण रहेगा।

आपके लिए लाल, मोतिया एवं काले रंग को छोड़ कर शेष सफेद, क्रीम रंग, सूआपंखी रंग, नीला, हरा एवं नारंगी शुभ एवं अनुकूल हैं।